WWJMRD 2018; 4(3): 232-234
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
UGC Approved Journal
Impact Factor MJIF: 4.25
E-ISSN: 2454-6615

आलोक यादव
(शोध–छात्र)
रक्षा एवं स्ट्रेतेजिक अध्ययन
विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद भारत

Correspondence:
आलोक यादव
(शोध–छात्र)
रक्षा एवं स्ट्रेतेजिक अध्ययन
विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय
इलाहाबाद भारत

भारत–आसियान सम्बन्धों में पूर्वोत्तर भारत की भूमिका

आलोक यादव

सारांश
शीतुयद्ध खत्म होने के पश्चात् भारत ने सोवियत संघ के पश्चात् विश्व राजनीति में अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से 'पूर्व की ओर देखो' नीति की शुरूआत की थी। जिसे 2014 में 'एक्ट ईस्ट नीति' में परिवर्तित कर दिया है। इस नीति के माध्यम से पूर्वोत्तर भारत की सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के भी प्रयास किये रहे हैं। आसियान के साथ कई सारी परियोजनायें चल रही है जो पूर्वोत्तर के राज्यों के विकास में भी सहायक होगी। प्रस्तुत लेख भारत–आसियान सम्बन्धों के परिपेक्ष्य में पूर्वोत्तर भारत की भूमिका व पूर्वोत्तर की समस्याओं के निदान हेतु किये जा रहे प्रयासों पर केन्द्रित है।

शब्दार्थः आसियान, पूर्वोत्तर भारत, सामरिक, म्यांमार, सुरक्षा, एक्ट ईस्ट नीति, चीन ।

परिचय–
ऐतिहासिक रूप से भारत का पूर्वोत्तर का क्षेत्र, म्यांमार (वर्मा), बांग्लादेश (पूर्वी बंगाल) द्वितीय विश्वयुद्ध के पहले भौगोलिक रूप सेएक ही क्षेत्र थे। भारत व बांग्लादेश 4096 किमी की सीमा साझा करते हैं। वर्तमान में दोनों देश सार्क व बिम्सटेक के सदस्य है। बांग्लादेश भारत से तीन तरफ से घिरा है, जो भू–राजनीतिक रूप से पूर्वोत्तर भारत के राज्यों के लिए महत्वपूर्ण है। बांग्लादेश से असम, मेघालय, मिजोरम व त्रिपुरा की सीमायें लगी है। वहीं सिक्किम चीन, नेपाल, भूटान से सीमा साझा करता है। तो अरूणाचल प्रदेश के उत्तर में चीन की सीमा लगती है। म्यांमार, अरूणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मिजोरम, मणिपुर से 1643 किमी की सीमा साझा करता है।
भारत–आसियान सम्बन्धों में पूर्वोत्तर भारत की भूमिका के महत्व के कारण विभिन्न मंत्रालयों ने अपनी अलग–अलग योजनायें इस क्षेत्र में शुरू की हैं। पूर्वोत्तर भारत जो भारत की कुल जनसंख्या का 3.8 प्रतिशत है यहाँ की कुल भू–भाग भारत के क्षेत्रफल का 8 प्रतिशत है। इसके सामरिक महत्व का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है यह क्षेत्र 5300 किमी0 की अन्तर्राष्ट्रीय सीमा से सटा है। 22 किमी0 चौड़ाई का सिल्लीगुड़ी गलियारा (चिकेन्स नेक) इसको शेष भारत से जोड़ता है जिसके उत्तर में चीन जैसे कुटिल पड़ोसी देश की सीमा भी लगती है। भौगोलिक रूप से भी यह क्षेत्र लगभग अलग–अलग दिखता है। इस क्षेत्र के भौगोलिक स्वरूप की बात करें तो यहाँ सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों की भरमार है। घने जंगल, पहाड़ी क्षेत्र, ब्रह्मपुत्र जैसी नदियां इस क्षेत्र को पयर्टन की दृष्टि से भी उत्कृष्ट बनाती हैं। अधिक वर्षा के कारण यहाँ की पहाड़ियाँ घने जंगलों से ढकी है। जो इस क्षेत्र की स्थिति को सुरक्षा की दृष्टि से सुभेद्य बनाती है।एक पहाड़ी से दूसरी पहाड़ी के बीच संचार लगभग असंभव लगता है। जिसके कारण यहाँ निवास करने वाली विभिन्न जनजातियांएक दूसरे के सम्पर्क के बजाय अलग–अलग रहती है। इसी के कारण वे राजनीतिक रूप से स्वतंत्रता की मांग करते हैं। इनकी संस्कृति व रहन–सहन, खान–पान अलग–अलग हैं।
मिजोरम व नागालैण्ड में सांस्कृतिक रूप से उतना ही अन्तर है जितना की पंजाब व गुजरात में। मिजो व नागा स्वतंत्रता की मांग कर रहे है। क्योंकि वेएकांत में रहते है जबकि गारो व खासी जैसी जनजाति मैदानी लोगों के सम्पर्क में होने के कारण मुख्य भूमि से जुड़े होने का लाभ समझते है और अलगाव की मांग नहीं करते हैं। सरकार अलगाव की मांगों को रोकने के लिए स्वायत्त क्षेत्रों की मांग को स्वीकार कर ग्रामीणों को कुछ प्रशासनिक अधिकार हस्तांतरित की है।
अरूणाचल प्रदेश में सरकार ने 1962 के बाद ध्यान दिया और वर्तमान में 2017 में जाकर पासीघाट में सैन्य हवाई अड्डा बनाया गया। यहाँ जीवन यापन की स्थिति कठिन है और जिसका लाभ चीन लेना चाहता है। यहाँ बौद्व धर्म का प्रभाव है। और तवांग बौद्ध धर्म का केन्द्र है। जिस पर चीन

अपना दावा करता है। असम की बात की जाय तो इसकी कुछ सीमा बांग्लादेश से लगती है। और बांग्लादेश से असम में हुआ अवैध प्रवासन यहाँ के जनसंख्या के मूल स्वरूप को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया है। वितरण यहाँ बड़े पैमाने पर बांग्लादेश से आये मुसलमानों व स्थानीय लोगों में संसाधानों पर बढ़ते दबाव के कारण साम्प्रदायिक दंगे होते रहे है।

असम व अरूणाचल के अलावा नागालैण्ड व मणिपुर में सुरक्षा स्थिति चिन्ताजनक है। नागालैण्ड म्यांमार से सटा हुआ है। यहाँ विभिन्न प्रकार के विप्लवी समूह सक्रिय है जो म्यांमार के साथ खुली सीमा (16 किमी0) का दुरूपयोग करते आये हैं। इन समूहों को चीन का भी सहयोग मिलता रहा है। वहीं त्रिपुरा, मिजोरम, मेघालय जैसे राज्य अन्य उत्तर–पूर्व के राज्यों की तुलना में शान्त है।

उत्तर–पूर्व में सशस्त्र हिसा करने वाले संगठन क्षेत्र की राजनीति को भी प्रभावित करते हैं। इनका प्रभाव चुनाव में भी दिखता है। हड़ताल, बन्द, जबरन वसूली व भ्रष्ट्राचार के माध्यम से प्रशासन का कार्य प्रभावित होता है। भारत सरकार ने इन परिस्थितियों से निपटने का द्विस्तरीय रणनीति पर कार्य कर रही है।एक तरफ सरकार हिंसात्मक संगठनों पर सैन्य कार्यवाही कर रही है तो दूसरी तरफ 'एक्ट ईस्ट' जैसी नीतियों के माध्यम से विकास को बढ़ावा दे रही है। इस क्षेत्र में जब केन्द्रीय सुरक्षा बल तैनात रहते है तो स्थिति नियंत्रण में होती है लेकिन इनके हटने के बाद स्थानीय पुलिस शांति कायम करने में असफल रहती है।म्यांमार सीमा पर मुक्त आवागमन क्षेत्र व दुर्गम क्षेत्र व खुली सीमा के साथ–साथ म्यांमार में उग्रवादी समूहों को मिल रही शरण से स्थिति और भी जटिल हो जाती है। 2015 में मणिपुर में भारतीय सेना के कैम्प पर छैब्छ;ज्ञद्ध संगठन के हमले के उपरान्त, भारतीय सेना के म्यांमार में 'सर्जिकल स्ट्राइक' कर कार्यवाही की। न्स्थ। व छैब्छ;ज्ञद्ध जैसे संगठनों को चीनी की खुफियाएजेन्सियों का सहयोग भी प्राप्त होता रहता है।ऐसी ही चुनौतियों से निपटने के लिए 'आपरेशन गोल्डेन बर्ड' अप्रैल–मई 1995 में चलाया गया था। वर्तमान में म्यांमार की सेना के साथ सहयोग की बात की जा रही है ताकि उग्रवादियों से कड़ाई से निपटा जा सके सके।

नागालैण्ड में छैब्छ;ज्ञद्ध के अलावा इसके अन्य गुटों के साथ सरकार ने शान्ति समझौता 2016 में किया। अलगाववादी या उग्रवादी स्थानीय लोगों में इस क्षेत्र के साथ हो रहे भेदभाव, भ्रष्टाचार व कुप्रशासन और बाहरी संस्कृति थोपकर स्थानीय संस्कृति को नष्ट करने जैसे उदाहरण देकर स्थानीय लोगों में अपनी पैठ को मजबूत करते हैं। इन समस्याओं से निपटने के लिए पूर्वोत्तर क्षेत्र के लोगों की भागीदारी देश के क्षेत्र में रोजगार देकर बढ़ायी जा सकती है। इस क्षेत्र के लोगों के साथ भेदभाव खत्म करने के बाद ही यहाँ शान्ति व समृद्धि को बढ़ावा दिया जा सकता है।

लगभग 5 दशक तक भारतीय सेना के उत्तर–पूर्व में बड़ी ही कुशलता के साथ कठिन प्रति विप्लव कार्यवाहियों का संचालन किया है जबकि यहाँ की भूभाग व मौसम प्रतिकूल है। नीति–निर्धारकों को 1990 दशक में की गई गलती से बचना होगा जब 'ऑपरेशन बजरंग' चलाया गया था लेकिन सफलता प्राप्त करने से पहले रोक दिया गया था। जिसके पुनः छः माह बाद 'ऑपरेशन राइनो' चलाया गया। जो सीमित सफलता प्राप्त किया। प्रति–विप्लव कार्यवाहियों में पूर्ण सफलता प्राप्त न होने का कारण सैन्य के साथ ही साथ आर्थिक व सामाजिक भी है अतः इस क्षेत्र में भी तेजी से सुधार की आवश्यकता है। वर्तमान में पूर्वोत्तर भारत को आसियान के साथ जोड़ने के लिए सड़क रेल व समुद्र तीनों मार्गों पर कार्य चल रहा है। क्योंकि यह क्षेत्र भू–आबद्ध है अतः यहाँ व्यापार को बढ़ावा देने के लिए इसे किसी बन्दरगाह से जोड़ना आवश्यक है। इसके लिए भारत म्यांमार के साथ कलादान मल्टी मॉडल ट्रान्सपोर्ट प्रोजेक्ट पर कार्य कर रहा है। जिसके अन्तर्गत कलादान नदी के माध्यम से मिजोरम को म्यांमार के सितवे बन्दरगाह से जोड़ने पर कार्य चल रहा है। इससे दक्षिण पूर्वएशिया के देशों के साथ मिजोरम का व्यापार बढ़ेगा। भारत को पूर्वोत्तर राज्यों में पहुँच काएक वैकल्पिक मार्ग बंगाल की खाड़ी के माध्यम से बन जायेगा।

इस कड़ी में बांग्लादेश का भी अहम स्थान है। भारत बांग्लादेश के साथ सहयोग करके स्वतंत्रता पूर्व जो रेलमार्ग व सड़क मार्ग थे उनको पुर्ननिर्मित कर सकता है जिससे भारत व बांग्लादेश दोनों को लाभ मिलेगा। भारत व बांग्लादेश के बीच बस सेवा चल रही है और भारत बांग्लोदश को बिजली भी निर्यात करना शुरू कर दिया है। आपसी बातचीत के माध्यम से सीमा विवाद का निपटारा भी हो चुका है। 9 नवम्बर 2017 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी व बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने वीडियो कान्फ्रेसिंग के माध्यम से 'बन्धनएक्सप्रेस' को हरी झण्डी दिखाई' यह वातानुकूलित रेल सेवा सप्ताह मेंएक बार कोलकाता व बांग्लादेश के खुलना के मध्य चलेगी। इसके अतिरिक्त भारत ठठप्छ (बांग्लोदश–भूटान–भारत–नेपाल) उपक्षेत्रीय सहयोग पर जोर दे रहा है जिसका लाभ पूर्वोत्तर राज्यों को होगा।

मेंकाग उपक्षेत्र को देश की 'एक्ट ईस्ट' नीति के रूप कें प्राथमिकता में शामिल किया गया है। इसलिए यहाँ चल रही भारत–म्यांमार–थाइलैण्ड त्रिपक्षीय राजमार्ग परियोजना राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। इसी योजना के अन्तर्गत म्यांमार व भारत तमु–क्इगोन–कलइवा खंड के पुलों और सड़कों का निर्माण जारी है। यह योजना चीन की 'वन बेल्ट वन रोड' का प्रति उत्तर साबित हो सकती है। बशर्ते इसको तय समय पर पूरा किया जाय। 1360 किमी0 लम्बी परियोजना 2015 में पूरी की जानी थी लेकिन अब इसे 2020 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। यह मणिपुर के मोरेह से शुरू होकर तमु (म्यांमार) से होते हुए थाइलैण्ड के माई–सोट तक जाती है। भारत में यह परियोजना विदेश मंत्रालय द्वारा म्यांमार और थाइलैण्ड में अपने समकक्षों के सहयोग से और वित्त मंत्रालय की ओर से बजटीय आवंटन से कार्यान्वित की जा रही है।

इस राजमार्ग में आर्थिक उत्कृष्टता क्षेत्र के रूप में विकसित होने की क्षमता है। राजमार्ग के साथ 'आत्मनिर्भर स्मार्ट गाँव' और 'विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र' बनाया जा सकता है। जो भारतीय और विदेशी बाजारों का दोहन करते हुए लाखों लोगों को रोजगार अवसर उपलब्ध कराएं। इसके साथ ही परियोजना के लिए पर्यावरणीय स्थिरता हेतु सर्वोत्तम तौर तरीके सुनिश्चित किये जाने चाहिए। इसे अगले चरण में कंबोडिया, लाओस और वियतनाम तक बढ़ाया जाना चाहिए।

दक्षिण पूर्वएशियाई देशों में भारत के राजनयिक हित है जिनको ध्यान में रखकर ही 'एक्ट ईस्ट' नीति बनायी गई है। आईएमटी राजमार्ग इस नीति में अहम साबित हो सकता है। अतः यह आवश्यक है कि इस परियोजना का अतिशीघ्र पूरा करने का प्रयत्न किया जाय। इससे जहाँएक तरफ आसियान के लोगों के साथ जुड़ने के लिए आवश्यक कड़ी प्राप्त होगी वहीं दूसरी तरफ इस क्षेत्र में चीन की तेजी से बढ़ती उपस्थिति और प्रभाव का सामना करने के लिए भारत को अपनी सामरिक पहुँच भी प्राप्त हो जायेगी।

भारत अपनी भौगोलिक सीमाओं से परे भी ठोस परिवहन संपर्क सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत है। इसलिए इस क्षेत्र में स्थिरताएवं अवसंरचनात्मक ढाँचे की आवश्यकता के साथ ही सीमावर्ती क्षेत्रों की सक्रिय भागीदारी भी कहीं अधिक जरूरी हो गयी है। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र से ही आईएमटी राजमार्ग प्रारम्भ होता है। पूर्वोततर राज्यों की राज्य सरकारें भी अपने पड़ोसी देशों के साथ और ज्यादा आर्थिक सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए सीमा को खोलने के विचार का समर्थन करती रही है। इस परियोजना को विकास केएक गलियारे के रूप में उभरना चाहिए, ताकि राजमार्ग के आसपास रहने वाले स्थानीय लोगों

को इसका लाभ अवश्य मिल सके। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र को 'पूरब का प्रवेशद्वार' माना जाता है। अतः इस सपने को यह साकार कर सकता है।

इस वर्ष गणतंत्र दिवस के अवसर पर आसियान के सभी 10 देशों के राष्ट्राध्यक्ष मुख्य अतिथि थे। और भारत–आसियान के मध्य 'लुक ईस्ट' नीति के 25 वर्ष पूरे हुए। पूर्वोत्तर के राज्यों में 4000 किमी0 की 'रिंग रोड' बनायी जायेगी तथा ब्रह्मपुत्र और बराक नदी के किनारों पर 20 नदी बन्दरगाह टाउनशिप बनाने की योजना है। इस क्षेत्र में विकास व आसियान के साथ कनेक्टविटी बढ़ाने में जापान प्रमुख सहयोगी राष्ट्र के रूप में सामने आया है। जापान पर्यटन, खाद्य प्रसंस्करण कौशल विकास, सीवरेज व जल आपूर्ति, विद्युत जैसे क्षेत्रों में सहायता उपलब्ध करा रहा है।

वर्तमान में भारत आसियान में अपनी पहुँच को स्थिर कर रहा है। कई आसियान देशों के साथ भारत ने रक्षा सहयोग को बढ़ावा दिया। दक्षिण चीन सागर विवाद और चीन की आक्रामक आर्थिक नीतियों को देखते हुए ये देश भारत की ओर आशा भरी दृष्टि रखते हैं। भारत, वियतनाम, मलेशिया, सिंगापुर भारत के साथ नौसैन्य अभ्यास नियमित रूप से कर रहें है। मार्च 2018 में मिलन अभ्यास जो अण्डमानएवं निकोबार द्वीप समूह में आयोजित हो रहा है, भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' के बढ़ते कदम का सूचक है।

संक्षेप में 'एक्ट ईस्ट नीति' की सफलता इसके पूर्वोत्तर क्षेत्र में क्रियान्वयन पर निर्भर करेगी क्योंकि यही क्षेत्र आसियान को भारत की मुख्य भूमि से जोड़ता है। इसलिए भारत को यहाँ अवसंरचनात्मक ढाँचा तेजी से विकसित करके क्षेत्र में शान्ति व स्थिरता लाना चाहिए और इससे आसियान देशों में चीन का प्रभाव सीमित करने में भी मदद मिलेगी।

सन्दर्भ

1. Barua, Alokesh, "India's North- East Developmental Issrues in Historical Perspective, Manohar Publication New Delhi, (2005)
2. Bora, Padmapani Kumar, "North East India in India- ASEAN Relations : A strategic and Developmental Prospective, Discovery Publisihing House, New Delhi (2015)
3. Bandopadhaya, P.K., " The North-East Saga" Publication Division, Min, Of I & B (2007)
4. "Look East policy turmed into Act East", The Hindu, November 14, 2014

5 भट्ट, विनायक, ''क्यों है कोको द्वीप समूह पर नजर रखने की जरूरत'' ओ0आर0एफ0 फाउण्डेशन, 5 अप्रैल, 2017

6 पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली, 12 जनवरी, 2018

7 ''पुराने ख्वाबों की नई ताबीर'' हिन्दुस्तान, 26 जनवरी, 2018

8 ASEAN Secretariat (2018) at http/www.aseansec.org/ar04.html

9 A Namarta Goswami, "Act East Policy : Northeast as a Strategic Catalyst, CLAWS Journal, 2015